7/30/24, 3:43 PM IMG-20240730-WA0082.jpg

April 2019

RNI No. KERHIN/2017/70006

ISSN No. 2456-625X

शोध सरोवर पत्रिका

10 अप्रैल 2019, वर्ष 3, अंक 10

'आरती', फॉरेस्ट ऑफिस लेन, वषुतक्काड्, तिरुवनन्तपुरम -14

www.shodhsarovarpatrika.co.in

कृष्णा सोबती साहित्य विशेषांक

त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका

अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी, तिरुवनन्तपुरम, केरल राज्य।

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

N.S.S. College, Pandalam

Principal
N.S.S. College
Pandalam

https://mail.google.com/mail/u/0/?tab=rm&ogbl#inbox/FMfcgzQVxlThTrBvLkgxzwbxsRBrcjWV?projector=1&messagePartId=0.1 1/1

Scanned with CamScanner

कृष्णा सोबती की कहानी "दादी अम्मा" में चित्रित वृद्ध जीवन

• डॉ.लक्ष्मी.एस.एस

आधुनिक हिंदी कथा लेखिकाओं में कृष्णा सोबती सबसे चर्चित हैं जिनका अलग व्यक्तित्व रहा है। उनका जन्म 18 फरवरी 1925 को गुजरात में हुआ, अब गुजरात यानी पंजाब का वह हिस्सा पाकिस्तान में है। कृष्णाजी को अपनी ज़िन्दगी में सबसे अधिक लगाव उनकी माताजी दुर्गा सोबती जी से ही रहा। उनकी माँ ज़्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थीं ,फिर भी जो संस्कार उन्होंने अपने बच्चों को दिया ,उसका प्रभाव कृष्णा सोबती में देखा जाता है। कृष्णा सोबती जी ने अपनी पढाई-लिखाई लाहौर, दिल्ली और शिमला में की है। कृष्णा जी ने साहित्य-सृजन के साथ-साथ नौकरी भी की । उन्होंने आर्मी अफ्सरों के बच्चों के स्कूल में प्रधान अध्यापिका का पद भी संभाला।

उनकी प्रमुख रचनायें हैं- उपन्यासिका/लम्बी कहानी- 'यारों के यार(1967), 'तिन पहाड़' (1968), 'ऐ लड़की'(1991), 'जैनी मेहरबान सिंह' (2007) आदि। उपन्यास- 'डार से बिछुड़ी'(1958), 'मित्रो मरजानी'(1967), 'सूरजमुखी अँधेरे के' (1972), ज़िन्दगीनामा' (1979), 'दिलोदानिश' (1993), 'समय सरगम'(2000) आदि। संस्मरण- 'हम हशमत1' (1997), 'हम हशमत 2'(1999), 'हम हशमत3' (2012), 'हम हशमत 4'(2014) आदि। साक्षात्कार - 'सोबती-वैद संवाद' (2005), 'मार्फ़त दिल्ली' (2018)आदि। आलोचना - 'मुक्तिबोध: एक व्यक्तित्व सही की तलाश में' (2017), 'लेखक का जनतन्त्र' (2018), आदि।

उनको अनेक पुरस्कार भी मिले हैं। वे 'ज़िंदगीनामा' नामक उपन्यास के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' (1980) और सन् 1981 में 'साहित्यशिरोमणि पुरस्कार' से सम्मानित हुई। सन् 1996 में साहित्य अकादमी फ़ेलोशिप मिला। कृष्णा जी को हिंदी अकादमी, दिल्ली की ओर से वर्ष 2000-2001 के 'शलाका सम्मान' से सम्मानित किया गया। साहित्य के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें सन् 2017 का 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्रदान किया गया था। कृष्णाजी का निधन 94 साल की उम्र में 25 जनवरी 2019 को दिल्ली में हुआ।

एक नारी होने के कारण उन्होंने नारी मन को सही ढ़ंग से समझा है। कृष्णा सोबती ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सभी पुराने बिम्बों को चुनौती दी है। आज औरत के जीवन में प्रतिदिन बदलाव घटित हो रहा है । स्त्री आर्थिक तौर पर स्वतंत्र होती दिखाई पड़ रही है यह एक अनिवार्य और शुभ संकेत है ,सामाजिक परिवर्तन का स्त्री के ज़िम्मे काम बढ़ा है। अब उसे घर- परिवार संभालकर उसकी सहेज भी करनी है और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के कारण किये जानेवाले कार्य में भी योगदान देना है। इस चुनौती ने औरत को आत्मविश्वास दिया है। उनके

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
Scanned with CamScanner

अनुसार "मैं अपनी ओर से यही कहना चाहूंगी कि स्त्री समाज का आधा हिस्सा है पुरुष से उसका वैर नहीं है, बल्कि उससे निकटतम रिश्ता है,लेकिन पुरुष को यह नहीं भूलना चाहिए कि स्त्री केवल देह नहीं है वह मन भी है और दिमाग भी"।[1]

कृष्णा जी ने अपनी रचनाओं में नारी को केन्द्र बनाकर प्रस्तुत करने की कोशिश की है। स्वाभाविक रूप से नारी के विभिन्न रूप हमारे सामने है - बेटी, पत्नी, माँ, दादी आदि। कृष्णा जी की कहानियों में निर्भीकता, खुलापन और भाषागत प्रयोगशीलता साफ तौर पर दिखाई देती है। कृष्णा सोबती कृत कहानी-संग्रह 'बादलों के घेरे' का प्रथम संस्करण 1980 तथा द्वितीय संस्करण 2006 ई में 'राजकमल प्रकाशन' द्वारा हुआ है। कृष्णा सोबती कृत कहानी-संग्रह 'बादलों के घेरे' चौबीस कहानियों का संग्रह है- 'बादलों के घेरे, 'दादी अम्मा, 'भोले बादशाह, 'बहनें, 'बदली बरस गई, 'गुलाबजल गंडेरियाँ, 'कुछ नहीं कोई नहीं, 'टीलो ही टीलो', 'अभी उसी दिन ही तो', 'दोहरी सौंझ', 'डरो मत मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा', 'जिगरा की बात', 'खम्माघणी अन्नदाता', 'सिक्का बादल गया', 'आज़ादी शम्मोजान की', 'कामदार भीखमलाल', 'पहाड़ों के साये तले', 'न गुल था न चमन था', 'एक दिन', 'कलगी', 'नफीसा', मेरी माँ कहाँ...', 'लामा', 'दो राहे दो बाहें'।

'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह की प्रमुख कहानी है 'दादी अम्मा'। 'दादी अम्मा' कहानी में वृद्धावस्था सम्बन्धी नवीन मूल्यों को दर्शाया गया है। वृद्ध जीवन एक ऐसा दौर है जहाँ अकेलापन चारों तरफ से घेर लेता है। अपनों की चाह है, वक्त पाने की इच्छा है, फिर भी भीड़ में वृद्ध तन्हा हो जाता है। खुद से भी दूर हो जाता है। हर वक्त एक नाराजगी चेहरे लिए हुए वह खुद के अकेलापन को दुनिया से छिपाने की कोशिश करता है। वृद्ध जीवन की विवशता के साथ दादी का प्यार भी इस कहानी में लेखिका व्यक्त करती है।

हिंदी कथा जगत में ऐसी अनेक कहानियां हैं जिनमें दादी को प्रमुख कथा पात्र के रूप में लेखकों ने प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद की 'ईदगाह' एक क्लासिक कहानी है जिसमें हामिद नामक छोटे लड़के को माता-पिता की मृत्यु होने पर उसकी दादी आमिना पाल-पोसकर बड़ा कर रही है। जैनेंद्र की कहानी 'रामू की दादी' दादी और नौकर के सहारे पलनेवाले एक बच्चे की कहानी है। मनमोहन भाटिया की कहानी 'बड़ी दादी', सूर्यबाला की कहानी 'दादी और रिमोट' , नीलाक्षी सिंह की 'ऐसा ही कुछ भी' आदि ऐसी कहानियाँ हैं, जिनमें मुख्य भूमिका दादी निभाती है।

कृष्णा सोबती की कहानी 'दादी अम्मा' का केन्द्र दादी नहीं, बल्कि परदादी है। यह एक ऐसा परिवार है जिसमें चार पीढियाँ रहती हैं। दादी कुछ झगडालू स्वाभाव की है, और अपने पति (दादा) और बहू से झगड़ती रहती है, लड़ने का कोई मौका हाथ से नहीं छोड़ती। जब बहुओं के कमरों की ओर जाती है, तो लड़-झगडकर लौट आती है - "और अम्मा तो सचमुच उठते-बैठते बोलती है, झगड़ती है, झुकी कमर पर हाथ रखकर वह चारपाई से उठकर बाहर आती है तो जो सामने हो उस पर बरसाने लगती है।"[2] विवाह के अवसर पर मेहंदी लगाने का रस्म शगुन का लक्षण है। लेकिन दादी के मन में आधुनिक पीढ़ी की रीतियों को देखकर अनेक प्रश्न उमड़ते हैं।- "बहु का श्रृंगार

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

Scanned with CamScanner

दादी-अम्मा बीच-बीच में कुछ बकती है, लड़कियों में यह कैसा चलन है आजकल ? बहू के हाथों और पैरों में मेहंदी नहीं रचाई। यही तो पहला शगुन है। दादी अम्मा की इस बात को जैसे किसी ने सुना नहीं।"[3] इसमें पाठक देख सकते हैं कि पुराने संस्कारों और रीतियों का पालन दादी चाहती है, लेकिन आधुनिक पीढ़ी इसे सुनने के लिए तैयार नहीं है। फिर बाद में पाठक देख सकते हैं कि दादी के प्रति बेटे-बहुओं और पोते-पोतियों में सम्मान और प्रेम का भाव बचा हुआ है। दादी अम्मा की मृत्यु के बाद परिवारवाले उनका स्नेह, त्याग, निष्कपट प्यार, आत्मसमर्पण की भावना के बारे में सोचते हैं। उनकी मृत्यु से दादा केलिए ही नहीं, बटे-बेटियों, पोते-पोतियों केलिए भी अपूरणीय क्षति हुई। "मौत के बाद रूखी सहमी-सी दुपहर। अनचाहे मन से कुछ खा पीकर घरवाले चुपचाप खाली हो बैठे अम्मा चली गई, पर परिवार भरपूर है। पोते थककर अपने-अपने कमरों में जा लेटे। बहुएँ उठने से पहले सास की आज्ञा पाने को बैठी रही। दादी अम्मा का बेटा निढाल होकर कमरे में जा लेटा।"[4] दादी के जाने के बाद दादा और भी थक गया, भले ही उसे अनेक बीमारियाँ कमज़ोर कर रही थीं, दादी की मृत्यु उसकेलिए एक कठोर आघात बन गया।

संक्षेप में 'दादी अम्मा' कहानी के द्वारा लेखिका ने बूढ़ापे की विवशताओं और कमज़ोरियों का यथार्थ चित्रण करने की कोशिश की है। इस कहानी में संयुक्त परिवार का चित्रण करके उसमें मौजूद पारस्परिक सम्बन्ध की ओर लेखिका ने संकेत दिया है।

इस कहानी में दादी अम्मा परंपरा का पालन करते रहना चाहती है। कृष्णा सोबती ने आधुनिक जन-जीवन का यथातथ्य चित्रण अपनी कथा रचनाओं में किया है। परंपरागत भारतीय संस्कृति का मूल्य जाननेवाली कृष्णा सोबती सदा अच्छाई को स्वीकार करने के पक्ष में हैं। नयी पीढ़ी ऐसी है कि प्राचीनता का महत्व नहीं जानती।

संदर्भ

1.इक्कीसवीं सदी के हिंदी महिला कथा साहित्य में स्त्री विमर्श- डॉ.अंजली चौधरी, पृ. सं. 79

2.दादी अम्मा, बादलों के घेरे -कृष्णा सोबती,पृ.सं. 33

3. वही, पृ.सं. 35

4. वही, पृ.सं. 39

आधार ग्रन्थ

1. बादलों के घेरे, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष 1980

सहायक ग्रन्थ

1. इक्कीसवीं सदी के हिंदी महिला कथा साहित्य में स्त्री विमर्श डॉ. अंजली चौधरी, श्रीराम प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष 2017।

2. कहानियाँ रिश्तों की, संपादक - डॉ. राजकुमार, राजकमल प्रकाशन।

3. मानसरोवर भाग-1, संपादक-डॉ. गुरबचन सिंह, दिल्ली पुस्तक सदन, प्रकाशन वर्ष 2016।

◆ असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
पी आर एन एस एस कॉलेज
मट्टन्नूर।
फोन - 9400856238

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam